

सभा मैं कौन आकर बेठा? (बाप-दादा) बाप काढ़ी नाम सुनाओ, दादा का भी नाम सुनाओ। (शिव बादा, ब्रह्मपा दादा) शिव नो निकराकार है पीछे? रथ का रथी है गीता मैं। और कोई शास्त्र में नहीं है। प्रे गीता मैं दिख लाते हैं रथ का रथी। रथ बनाया है घोड़े-ग्राम गाड़ी का। आत्मा को तो रथ चढ़ाह स मनुष्य का। भक्ति-मार्ग मैं घोड़े-गाड़ी का दे दिया है। परिं शिव के मंदिर मैं बैल खा दिया है। तो क्या बैल कहें वा घोड़े-गाड़ी या कोई भागीरथ। भाग्यशाली रथ तो मनुष्य को कहा जाता है। बाप बैलाते हैं मैं किंसका स्थ लेता हूँ। जो अपने जन्मों को नहीं जानते। मैं जानता हूँ। बहुत जन्म भी कोन लेते हैं। यह पहले 2 सतयुग मैं तो बहुत जन्म भा इसने लिया होगा। सांकरा गोरा भी यह बना होगा। दुनिया भी पतित तो शरीर भी पतित। बुलाने वाले भी पतित। नम्बरवन पावन सौ ही नम्बरवन पतित। कितना अच्छी रीत समझाया जाता है। प्युजियम आद मैं आते हैं कहते हैं ब्रह्मा मैं क्यों और किस मैं क्यों नहीं आता। और इमाम बना हुआ है। उनका भी रथ है। स्वयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज खुद बतलाते हैं। भगवानुवाचः भगवान ज्ञानानिराकार को ही कहा जाता है। देहधारी को प्रश्न भगवान नहीं कहा जा सकता है। ब्रह्मा देवतार्थनमः कहनाभी राग है। ब्रह्मादेवता होता नहीं। विष्णु देवताकहते हैं परन्तु पहचान चाहिए। विष्णु ल ०८० के दो स्प को कहाँ जाता है। परन्तु सूक्ष्मवतन में जैवर आद कहाँ से आई। यह सभी साठ की बाते हैं। भक्ति-मार्ग वस्ते ने विष्णु को सज्जाकर विष्णु अवर्नार कहते हैं। घस्तव मैं सभी आत्मार असरब्रिंश होती हैं क्योंकि प्र ऊपर से आकर पार्ट बजाती है। वह गर्भ में अवतरित है। बापकहते हैं मेरथ मैं प्रवेश करता हूँ। लोन, किराया पर लेना हूँ। शिव बाबा को किराया देना पड़ता है। प्राञ्च ते ऊंच बाप रथ भी तो ऐसा ही लेने ना। ए लेकर नाम खोने हैं ब्रह्मा। नहीं तो अ ब्रह्म कहसेर आया। ब्रह्मा के बाप का नाम बताओ। देहधारी हे ना। यह सभी बन्डरफुल नई 2 गुह्य बातें बाप हीं आकर बच्चों को समझाते हैं। बाप खुद कहते हैं जो अपने को ईश्वर कहते हैं वह हिरण्य कश्यप जैसा देना है। भगवानुवाच है ना। भगवान बैठ समझते हैं। बैस ज्ञान मार्ग मैं लड़ाई का नाम-निशान भी नहीं। संगम पर ब्राह्मण बच्चे हिंसक नहीं होते। अहिंसक होते हैं। क्रोध करना भीहिंसा है। भूत हे ना। किसको रज होता है। आजकल के बच्चे तो जैसे जिन हैं। मन्द्रम को तंग करते रहते हैं। कृष्ण कोई ऐसे नहीं, ऐसाकुछ करता था। तब बांधी थी नहीं। इस समय के बच्चे ऐसे हैं। तो भी हाथ न चलाना है। सतयुग मैं तोऐसा कुछ होता ही नहीं। गाया हुआ है आतं ईन्द्रिय सुख गोपीबल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। पुरुषोत्तम संगम युग को कोई भी नहीं जानते। बाप बैठ समझते हैं। उत्तम पुरुष बनना चाहें ना। इससिलिर इनको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। मास वा वर्ष नहीं होता। भक्ति-मार्ग मैं फिरदो मास वा वर्ष रथ दिया है।

यह बाप-दादा है। टीचर भी है। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सदगुर सर्व की सदर्गति करने वाला है। बैहद की हिस्टी जागराती भी यह बतलाते हैं। मनुष्यों को तो पता नहीं है। बाप आकर हर बात समझते हैं। चिंठी भी आती है लक्ष्मी दादा के नाम पर। या शिव बाबा के अर आप प्रजापिता ब्रह्मा। योप्रजा पिता ब्रह्मा कुमारियां। तो गोया के अर ब्रह्मा हुआ ना। है हीं कुमारी। चिंठायां उन पास जाती है। शिव बाबा है मालिक। वही हिसाब देते हैं। यह ट्रस्टी है शिव बादाका खजाने का। हिसाब किताब शिव बाबा देते। पदम-पति शिव बाबा बनाने हैं न कि ब्रह्मा। ज्ञान मिलने से भक्ति छूट जाती है। ज्ञान जिन्दा बाद भक्ति मुर्दावाद। फिर भक्ति जिन्दा बाद ज्ञान मुर्दा बाहा। ज्ञान बाप ही देते हैं। ज्ञान रून होरे मिशल है जो बाप हो देते हैं। बाकी शास्त्रों मैं ज्ञान तो पत्थरों मिशल है। पत्थर बुधि बना गये हैं। बापस कोई भी जा नहीं सकता। रावण गृज्य है कांटों का जंगल। रामराज्य है फूलों का वगीचा। आय भी वहाँ बहुत बड़ो। काल खा न सके। बाप है कालों का काल। कहते हैं इनको भगवान ने भैजा है। बाप कहते हैं तुमकों काल पर विजय पृहनात।

हूँ। सत्युग में काल होता ही नहीं। तुम अभिलोक में थे फिर ८४ जन्मलेते मृत्युलोक में आये हो। यह है नई बात जो दिस पुरानी हो जाती है। त्योहार भी सज्जे इस समय के ही है। रामायणभी इस समय का है। भक्ति-मार्ग को दुर्गीत मार्ग, ज्ञान मार्ग को खण्ड सदगतिकार्गिकहा जाता है। भक्ति में ले जाने वाला अतेक गुरु ज्ञान में ले जाने वाला एक सद्गुरु। कहते हैं तुम स्त्रोपधान थे ना। फिर सतो लो तमी मैं आये हो। सत्युग में तुम्हारी सुर्खी हींगी बहुत ऊँची थी। फिर डीपीकम होती जाती है। फिर याद से ही डीलो चढ़ेगी। पावन वर्णो। पतित-पावन वाप है। दोषीयंगा और ही पतित-पावनो होती है। परथर बुधि समझते नहीं। वाप कहते हैं पावन बनाने वाला मैं हूँ। भक्ति में धर्म के लिते हैं। सत्युग में तो अंधेयस्त्र छैता ही नहीं। यह संगम युग है। ब्राह्मण बच्चे हो जाते हैं और कोई मैं ज्ञान है ही नहीं। तुम अभी देवता बन रहे हो। वहाँ फिर ज्ञान की प्राप्ति होंगी। वाप संगम पर जाकर सभी की सदगति करते हैं। फिर यह ज्ञान प्राप्ति लोप हो जाता है। गाया जाता है सर्व की सदगति दाका एक। सर्व का दुर्गीतका दाता अनेक। जहाँ भी समझ की बात है ना। कहते हैं दर्शन करना है। बोलो किसका दर्शन करेंगे। गुरु तो यहाँ है नहीं। यह तो सुप्रीम टीचर है। टीचर का दर्शन करने से पढ़ाई सीख टीचर स बन जावेंगे क्या। बाबा मिलते ही हैं बच्चों से। बाकी तो सभी बन्दर नां बलाएं हैं ना। सन्यासी भी कहते हैं स्त्री नागिन है। तो क्या नाग नहीं हैं। सन्यासी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र के आचार्य। शिव है ज्ञान का आचार्य। वह भी सुनाते हैं यह भी सुनाते हैं। वहशास्त्र सुनाते यह तो ज्ञान का सागर है। सो जब आवे तब तो अ सुनावे ना। इसको कहा जाता है टावर ऑफ सोलेन्स। टावर ऑफ हेल्प, नावर ऑफ बेल्प। वहाँ तुम्हारी प्रकृति दासी बनती है। अभी तुम प्रकृति के दास हो जाओ। फिर तुम सूटि के मालिक बन जादे हो। वहाँ कब तुमन नहीं लगते। धरती नहीं हिलती। यहाँ कोई द्वांश आद नहीं बजती है। सूटि चक्र का ज्ञान भी बुधि मैं डें। पैकेज में रचियता और स्वना को जानते हो। इनको ज्ञान कहा जाता है। भक्ति मैं तो धर्म के लिए रहते हैं। इसमें है शार्न्ति। शरीर निर्वाह प्रिस= लिए कम भी करना है। दिल यार डे कर्म कार डे। जैसे आशुक माशुक हीते हैं। माशुक याद से आन से हो माशुक सामने छड़ा हो जाता है। वह आशुक होते हैं दुनियांवाली। तुम हो भक्ति मार्ग के आशुक। भक्ति मार्ग मैं तुम भी कहते हो बाबाजाप आवेंगे तो हम आप पर कुर्बान जावेंगे। वारी जावेंगे। परंतु अभी देखो कोई बिरले कुर्बान जाते हैं। भक्ति के हैं गुरु देरा स्त्रीयों के प्रति गुरु देरा। यह पति नहीं। यह तो वाप टीचर और गुरु हैं। वाप तो है ही। ब्रदहुज्ज्ञ है। सभी अहमाओं का एक ही दाप। भक्ति मैं दुःख मैं याद करते हैं। सुख मैं कोई याद करते नहीं। अच्छा मीठे झानो बच्चों प्रित रहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रहानी बच्चों प्रित रहानी दादा का नगर्ते—नमस्ते॥ अर्ड सारा, यह समझने की जरूरी नहीं।

पायन्दसः:- तुम बच्चे ज्ञन और योग मैं जोर भर जावेंगे तो फिर तुमको मकान आद भी सभी आपे ही मिल जावेंगे। योग और ज्ञान ही काम आवेंगे। जहाँ देवताओं के मंदिर हो, भक्त लोग हो उन्हों को जाकर सभीओं। वहाँ मंदिरों मैं तो भक्त लोगदर मिलेंगे। वहाँ है भक्ति। यहाँ है ज्ञान। वाप सर्विस की युक्तियां बहुत बताते रहते हैं। बच्चों को पुस्तकार्थ करना है। अखबार मैं भी तुम डात सकते हो। बन्दर को बात है भगवानु-वाच काममहाश्वरु है, तुम काम चिक्षा पर चढ़ कर काले बन गये हो। तुम फिर काम चिक्षा पर श्रेष्ठविठा कर काले बनाने के लिए यहाँ हो जाओ। हम सभी की ज्ञान चिक्षा पर बिठावेंगे तो उन्हों का कल्याण हो जावेगा। ऐसी श्रीमत है। शिव बाबा कहते हैं मेरा भण्डार भरपूर है। कुंआ भरा हुआ है। बाबा कहते हैं बच्चें तुम्हारी हुण्डी हम संवार लेंगे। सांवल शाह न है ना। वह तो एवर गोरा है। अच्छा ओम। हलो सर्व सेन्टर निवासी ने रुनो ब्राह्मण कुल भूषणों प्रेत हम सभी मधुबन निवासियों की याद प्यारले बाप दादा प्रज्ञिन सहित स्वीकार करना जी। अच्छा अभी बिदाइ।